1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 30 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 जून, 2021 से रविवार 20 जून, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्यसमाज देशभर में बना रहा है ऑक्सीजन कंसन्स्ट्रेटर बैंक : मानव सेवा और देश को कोरोना की तीसरी लहर से बचाने का है - लक्ष्य

जम्मू, गांधीधाम, जामनगर, औरंगाबाद, रोहतक, पंचकूला, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, कालीकट, कांगड़ा, सोलन, बैंगलोर, बीदर, इन्दौर, रायपुर, बामनिया, थांदला, बांसवाड़ा, कोटा, जालन्धर में आरम्भ हो चुके हैं सेवा केन्द्र

उ. अमेरिका के आर्यसमाजों द्वारा भारत भेजे गए हैं - ऑक्सीजन कंसन्स्ट्रेटर

मानव सेवा की कोई सीमा या परिधि नहीं होती। मानव सेवा तो एक ऐसा अखंड यज्ञ है जिसकी सुगंध से संपूर्ण वायुमंडल को सुवासित किया जा सकता है। उत्तरी अमेरिका के आर्य समाजों द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजे गए ऑक्सीजन कंसंट्रेटर जहां कोरोना की दूसरी लहर में अनेक मनुष्यो को जीवन प्रदान करने वाले परम साधन सिद्ध हुए, वही अब कोरोना की तीसरी लहर की शंका को देखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मानवता की सेवा को पूर्ण विस्तार प्रदान करते हुए पूरे भारत में अनेक स्थानों पर कंसंट्रेटर बैंक तैयार किए गए हैं। जिनमें जम्मू, गांधीधाम, जामनगर, औरंगाबाद, रोहतक, पंचकूला, कुरुक्षेत्र हरिद्वार, कालीकट, कांगड़ा, सोलन, बेंगलुरु, बीदर, इंदौर, रायपुर, बामनिया, थांदला, बांसवाड़ा, कोटा, जालंधर इत्यादि स्थानों पर ऑक्सीजन कंसंट्रेटर बैंक निर्मित किए गए हैं। इसके पीछे सभा की भवना और कामना यही की कोई भी मनुष्य ऑक्सीजन के अभाव में तथा निर्धनता के कारण मौत का शिकार न बने। सब सुखी हो निरोग हो, सबका कल्याण हो। सभा की आगामी सेवाभावी योजना के अंतर्गत ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर की व्यवस्था दीमापुर, गुवाहाटी, सिलीगुड़ी, डिफू, बोकाजान, लोहरदगा, रांची, पटना ,मुंबई नागपुर, लातूर भुवनेश्वर, अहमदाबाद, बनारस, हल्द्वानी, कोलकाता आदि स्थानों पर शीघ्र ही कंसंट्रेटर भेजे जाएंगे। आर्य समाज चाहता है कि पूरे भारत में और विश्व में जहां पर भी मानवता की रक्षा करनी हो, किसी भी मनुष्य का जीवन बचाना हो तो उसके लिए हर तरह से हमें आगे आना चाहिए ।क्योंकि अपने लिए और अपनों के लिए जीवन यापन करना कोई बहुत बड़ी बात नहीं होती, बड़ी बात तो तब होती है कि जब मनुष्य अपने सीमित दायरे का विस्तार करते हुए संपूर्ण धरती को और धरती पर रहने वाले मनुष्यों को अपना परिवार समझे, अगर किसी की आंखों से दुख के कारण आंसू बह रहे हो तो एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के लिए मददगार बनकर खड़ा हो जाए।जब भी मानवता के लिए कोई पीड़ा चुनौती बने तो हर मनुष्य उसे स्वीकार करे। सब एक दूसरे के दुखों को पूरी शक्ति के साथ दूर करने का प्रयास करें। आर्य समाज का मूल मंत्र है मानव सेवा, संसार का उपकार करनाआर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, इसी भावना को आत्मसात करते हुए आर्य समाज लगातार आगे बढ़ रहा है और सदैव आगे बढ़ता रहेगा।

चुनावों के पश्चात् बंगाल में लगातार हो रही हिंसा रोकने के लिए उपराज्यपाल को दिया ज्ञापन

सार्वदेशिक सभा ने लिखा राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमन्त्री ममता बैनर्जी को पत्र

आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने समुदाय विशेष के लोगों द्वारा निशाना बनाए जा रहे हिन्दूओं की रक्षा के लिए और दोषियों पर सख्त कार्यवाही करने के लिए महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी, प्रधामन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं प्रदेश की मुख्यमन्त्री ममता बैनर्जी को पत्र लिखते हुए मांग की कि बंगाल में मानवता की करुण पुकार सुनें, आज वहां मानवता चीत्कार रही है, विध्वंसक, बेखौफ होकर शरेआम विनाशकारी खेल खेल रहे हैं, इसलिए वहां की समस्त विषम परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए हिंसक आतताई, असामाजिक तत्त्वों के विरुद्ध तुरन्त ऐसी कठोर कार्यवाही की जाए, जिससे भारत की एकता और

अखंडता में लोगों का विश्वास बरकरार रहे, देश के लोकतांत्रिक ढांचे के प्रति निष्ठा और समर्पण का भाव बना रहे।

उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी ने उपरोक्त पत्र दिनांक 9 मई में लिखा था कि पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजे घोषित होने के बाद से वहां लगातार विनाशकारी हिंसा का तांडव जारी है। जसमें पूर्व मेदिनीपुर, पश्चिम मेदिनीपुर, बीरभूम, जलपाईगुड़ी, दक्षिण दिनाजपुर इत्यादि अनेकानेक शहरों और गांवों में लगभग 273 से ज्यादा आगजनी, लूटपाट और जानलेवा हमलों की घटनाएं हो चुकी हैं, जिनमें दर्जनों निर्दोष लोगों को असमय मौत के घाट उतार दिया है, सैकड़ों परिजन बिलखते रह गए, हजारों लोग अपना घर

- जारी पृष्ठ 4 पर

देववाणी-संस्कृत

प्रभो! मेरी पुकार सुन

वेद-स्वाध्याय

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। -ऋ. 6/47/11
ऋषिः गर्गः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः विराट्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - त्रातारं इन्द्रम्= पालन करने वाले इन्द्र को, **अवितारं इन्द्रम्**= रक्षा करनेवाले इन्द्र को **हवे हवे सुहवम्**= एक-एक संग्राम में सुख से पुकारने योग्य **शूरं इन्द्रम्**=पराक्रमी इन्द्र को और **शक्रं इन्द्रम्**=सर्वशक्तिमान् इन्द्र को **पुरुहूतं इन्द्रम्**=जिसे असंख्यों सत्पुरुषों ने समय-समय पर पुकारा है-उस इन्द्र को मैं भी **ह्वयामि**=पुकारता हूं, बुलाता हूं। **मघवा इन्द्रः**=वह ऐश्वर्यवान् **इन्द्र नः स्वस्ति धातु**=हमारा कल्याण करे।

विनय- यह संसार एक रणस्थली है। इसमें प्रत्येक मनुष्य अपनी समझ के अनुसार किसी-न-किसी विजय को पाने में लगा रहता है और उसके लिए दिन-रात संघर्ष में लग जाता है। यद्यपि इन संघर्षो में विजय पाने के लिए मनुष्य प्रायः अपने शरीर-बल, बुद्धि-बल, संगठन-बल, विज्ञान-बल, मित्र-बल, सैन्य-बल आदि बलों का प्रयोग करता हुआ अभिमान से समझता है कि मैं इन बलों द्वारा ये सब लड़ाइयाँ जीत लूँगा, परन्तु एक समय आता है जब मनुष्य इन सब बाह्य-बलों से हारकर, निराश होकर, संसार की किसी अज्ञात शक्ति को ढूंढने व पुकारने लगता है। 'हे राम', या 'अल्लाह' या 'O my God' आदि कहकर किसी-न-किसी नाम से, हे इन्द्र! असल में वह तुझे पुकार उठता है। तब पता लगता है कि, हे संसार की अज्ञात, अदृष्य शक्ते! तू ही एकमात्र शक्ति है। संसार के शेष सब बल तेरे ही आधार से बल हैं। जब तू चाहता है तब वे बल होते हैं, जब तेरी इच्छा नहीं होती तब किसी भी बल में शक्ति नहीं रहती। इसलिए, हे इन्द्र! तू ही मेरा सच्चा पालक है ओर तू ही एकमात्र सब आपत्तियों से मेरा रक्षक है। तुझ ही महापराक्रमी को हर संग्राम में पुकारना चाहिए। तेरा ही पुकारना शोभन है, सुफलदायक है और किसी को पुकारना निष्फल है, बेकार है। पुकारा हुआ तू भक्तजनों के संकट एक क्षण में दूर कर देता है। तू सर्व शक्तिमान् है। अतएव तू 'पुरुहूत' है, सदा से जबसे सृष्टि चली है सन्त लोग तुझे आड़े समय में पुकारते रहे हैं, याद करते रहे हैं। हे शक्र! तुझे छोड़कर मनुष्य और किसे पुकारे? इसलिए, हे इन्द्र! मैं भी तेरी पुकार मचा रहा हूं। मघवन्! तू मेरे लिए कल्याणकारी होता हुआ मेरी पुकार सुन। मैं निश्चय से जानता हूं कि मैं तेरा पवित्र नाम लेता हुआ अपने इस जीवन की सब लड़ाइयों में विजय पाता चला जाऊँगा। मुझे किसी युद्ध में किसी भी अन्य हथियार की आवश्यका नहीं। बस, तू मेरी वाणी पर रहे, यही चाहिए। तेरा नाम पुकारना मुझे सब विपत्तियों से पार कर देगा।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पाठ्य पुस्तकों में पूर्वोत्तर की संस्कृति की अनदेखी

एनसीईआरटी से क्यों नाराज है पूर्वोत्तर भारत

..... दा गेम्स ऑफ बुक के ट्विटर हेंडल ने एनसीईआरटी की पूरी कलाई खोल कर रख दी कि सरकारों ने शिक्षा क्षेत्र को दशकों से वामपंथियों के मानसिक दिवालियेपन को भेंट चढ़ा रखा है। अब पूर्वोत्तर के लोग थोड़े जागरूक हुए अपनी मांग लेकर सामने आये, उनकी मांग है कि नॉर्थ ईस्ट का इतिहास पूरी तरह से धुल चुका है। अब एनसीईआरटी की किताबों में उनके इतिहास और डेमोग्राफी पर अध्याय शामिल किया जाए। जिससे की देशभर में उनके साथ रेसिज्म की घटना न हो और उन्हें भी भारतीय समझा जाए।.....

उन्होंने 1947 में मजहब के नाम पर अलग देश ले लिया, उन्हें तो इस देश के पाठ्यक्रम ने पूरा सम्मान दिया और जिन लोगों ने 1962 में चीन के साथ युद्ध में इस देश के लिए अपना बलिदान दिया उन्हें देश के स्कूली पाठ्यक्रम से बाहर फेंक दिया। कुछ दिन पहले ऐसा ही कुछ भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लोग कह रहे थे। सोशल मीडिया के एक प्लेटफार्म ट्विटर से उठे इस आन्दोलन का उद्देश्य एनसीईआरटी की किताबों में पूर्वोत्तर के राज्यों को लेकर एक अलग से अध्याय शामिल करवाना है, जिससे की देशभर में बाकी लोगों को नॉर्थ ईस्ट का इतिहास, जीवनशैली और देशभक्ति के बारे में पता चल सके।

देखते ही देखते इस स्टॉर्म से लोग जुड़ने लगे और कबांग नाम के एक यूजर ने इस ट्रेंड का समर्थन करते हुए लिखा, नॉर्थ ईस्ट इंडिया का एक आम नागरिक होने के नाते मैं गर्व के साथ इस ट्विटर स्टॉर्म से जुड़ रहा हूं। देश और पूरी दुनिया को हमारे इतिहास, भूगोल और संस्कृति के बारे में जानना चाहिए। एक अन्य ट्विटर हैंडल मीको साइकिया ने इस इस ट्रेंड का समर्थन करते हुए लिखा कि एनसीईआरटी की किताब में नॉर्थ ईस्ट इंडिया को लेकर सेक्शन शामिल होगा तभी तो हम इस बात को जान पाएंगे कि नागालैंड में भारत के आखिरी हैडहंटर ट्राइब्स पाए गए। इसके अलावा इस ट्रेंड में शामिल जेस्से चीशी नाम के एक ट्विटर यूजर ने इस ट्रेंड का समर्थन करते हुए लिखा हम अपने देश में ही एलियन बनकर नहीं रहना चाहते। एनसीईआरटी की किताब में नॉर्थ ईस्ट के लिए चैप्टर एड कीजिए।

दरअसल पिछले कुछ समय से उत्तर भारत समेत अनेकों जगह एनसीईआरटी के पाठ्यक्रम को लेकर कई लोग मुखर हैं। उनके सवाल हैं कि किसी अध्याय में एनसीईआरटी रीना को लैटर लिखना सिखा रहा है कि अहमद को रीना लैटर कैसे लिखे, और बच्चों को सिखा रहा है कि दीवाली पर पटाखे जलाने से शोर होने के कारण दिवाली बुरा पर्व है, लेकिन बकरीद पर मासूम जानवर को हलाल करना उसके लिए अच्छा है। सिर्फ इतना ही नहीं एनसीईआरटी कक्षा एक के बच्चे के सामने मौलाना साहब को शिक्षित और कक्षा दो के बच्चे के सामने पंडितजी को हसोड़ बेवकूफ साबित करने में लगा है।

सिर्फ यही नहीं कई लोगों ने सवाल किया है आखिर छठी कक्षा के लिए प्रकाशित हिंदी की किताब में भारत के आराध्य श्री राम के खिलाफ घृणा और 12वी कक्षा के प्रकाशित राजनीति शास्त्र की किताब में मुस्लिम धर्म को हिंदू धर्म से बेहतर बताया गया है। इसके अलावा एनसीईआरटी अपने पाठ्यक्रम में अंडों को भी प्रोमोट कर रहा है।

असल में पिछले दिनों एक यूट्यूबर द्वारा अरुणाचल को चाइना का हिस्सा बताये जाने के बाद इस ट्विटर स्टॉर्म में देशभर के 30 स्टूडेंट्स यूनियन और ऑर्गनाइजेशन शामिल हुए। इस मूवमेंट का नाम ए चेप्टर फॉर नार्थ ईस्ट रखा गया। जिससे की देशभर में एनसीईआरटी की किताबों से लोगों को नॉर्थ-ईस्ट राज्य का इतिहास, जीवनशैली, लाइफस्टाइल और देशभक्ति के बारे में पता चल सके।

हालाँकि पूर्वोत्तर भारत की देशभक्ति के बारे कुछ समय पहले किरण रिजिजू ने बताया था कि 1962 के युद्ध में चीनियों ने उनके गांव पर कब्जा कर लिया और असम तक पहुंच गए। जबकि नेहरू ने क्षेत्र के लोगों को आश्वासन दिया था कि हम आपको बचाएंगे। लेकिन बाद में उन्होंने आकाशवाणी पर चीन के सामने आत्मसमर्पण की घोषणा कर दी थी। नेहरू ने टाटा, बाय-बाय कहा और हमें छोड़ दिया। लेकिन इसी नार्थ ईस्ट के देशभक्त लोगों ने उस समय जोर दिया कि भारत को समर्पण करने की जरूरत नहीं है। हम भारत नहीं छोड़ेंगे और भारत के साथ एकजुटता से खड़े रहेंगे।

अब सवाल ये है कि आखिर एनसीईआरटी पूर्वोत्तर के देशभक्त लोगों का गरिमामयी इतिहास उनका कल्चर क्यों नहीं जोड़ सकती और अभी एनसीईआरटी जो अब पढ़ा रहा है उससे कितना लाभ बच्चों को होगा? क्योंकि इनकी कविता देख लीजिये, ये लिखते हैं कि -

रात हुई तारीकी छाई मीठी नींद सभी को आई,
मुन्नू सोया अप्पा सोई अब्बा सोये अम्मी सोई।

अब ये कविता एनसीईआरटी ने शामिल की या फिर 1947 के बंटवारे वाले उर्दूवुड ने आप खुद समझ सकते हैं!

यही नहीं सच्चर कमेटी की रिपोर्ट कहती है कि देश में मुस्लिम समाज पिछड़ा है, दीन-हीन है। लेकिन एनसीईआरटी की किताबें इस बात को नहीं मानती वो तो बच्चों के दिमाग में भर रही है कि हिंदु समाज पिछड़ा है। अब यही बात हिन्दुओं को लेकर पाकिस्तान का पाठ्यक्रम कहता है तो दोनों देशों के पाठ्यक्रम में अंतर कैसे खोजें?

क्योंकि एनसीईआरटी की किताबों में हरि नाम का हिन्दू लड़का लड़कियों को छेड़ता है, उन्हें चिकोटी काटता है और अब्दुल उन्हें बचाता है। कक्षा तीन और चार के गणित की किताबों में कुतुबमिनार और ताजमहल जैसी मजहबी जगहों को प्रमोट करता है। 2007 में तैयार की गई एक पुस्तक में द लिटिल बुली चैप्टर के माध्यम से छोटे बच्चों में हरि के नाम पर एक ऐसे बच्चे की कहानी कही गई है जो लड़कियों पर धौंस जमाता है, सब बच्चे उससे डरते हैं और उससे नफरत करते हैं, उससे दूर रहते हैं और आखिर में एक केकड़ा उसे काटकर सबक सिखाता है। अब ये कहानी कहाँ से आई! इस बात को समझने के लिए द लिटिल बुली की मूल लेखक और उसकी मूल कहानी को तलाशना होगा।

- शेष पृष्ठ 7 पर

केरल में आर्यसमाज के 100 वर्ष (1921-2021) : संक्षिप्त इतिहास

आर्य समाज, राष्ट्रीय पुनर्जागरण आंदोलन, केरल में 1921 के मोपला दंगों से संबंधित राहत कार्य के साथ सक्रिय हो गया। केरल में यह एक ऐतिहासिक घटना थी कि हजारों धर्मान्तरित लोगों को शुद्धिकरण के माध्यम से जबरन पुरोहितों के पास वापस लाया गया। वह एक तरह का रूपांतरण का अंत था। याद रखें उस समय कुछ रूढ़िवादियों ने इसका विरोध किया था। ऐसा कहा जाता है कि स्वधर्म में लौटने वालों को 'चेला नायर' और 'चेला नंबियार' कहा जाता था। उस समय के कुछ सनातन हिंदुओं का मानना था कि जो लोग एक बार इस्लाम में परिवर्तित हो गए, उन्हें मृत्यु तक इस्लाम में ही रहना चाहिए। आर्य समाज ने इसे ध्वस्त कर दिया।

हमारे इतिहास की किताबों ने केरल में आर्य समाज द्वारा किए गए पुनर्जागरण आंदोलनों की अनदेखी की है। इसका मुख्य कारण कम्युनिस्टों का प्रसार है। भारत में साम्यवाद के आगमन से पहले हुई सामाजिक सुधार की गतिविधियों को भी उनके नाम पर प्रचारित करने की प्रवृत्ति है।

इस संदर्भ में, पिछले सौ वर्षों के दौरान केरल में आर्य समाज की सामाजिक पुनर्जागरण गतिविधियों और शुद्धि अभियान को आर्य प्रचारों द्वारा मनाया जाना चाहिए जिन्होंने इसका नेतृत्व किया। 1921 में मलबार में मुस्लिम कलापकारियों से किए गए विशेष रूप से हिंदुओं पर क्रूर हमलों पर लाहौर आर्य समाज का ध्यान भौगोलिक रूप से सुदूर उत्तर पंजाब में केरल की ओर खींचा। यह खबर 30 अक्टूबर, 1921 को सिंध, बलूचिस्तान और लाहौर में आर्य स्थानीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्यालय तक पहुंची। जब सदन के अध्यक्ष महात्मा हंसराज ने यह खबर सुनी तो उन्होंने बताया गया कि वे पूरी रात सो नहीं सो पाए। उन्होंने कहा, 'जागृति के इस समय में भी, किसी को जबरन इस्लाम में परिवर्तित करना हमारे लिए एक बड़ी चुनौती है। हम इस चुनौती का सामना करेंगे' (भाग ए, पृष्ठ 130, इंद्र विद्या वाचस्पति के 'आर्य समाज का इतिहास' द्वारा प्रकाशित। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली।) उन्होंने अगली सुबह चर्चा की एक बैठक बुलाई। डीएवी कॉलेज, लाहौर से स्नातक आर्यप्रचारक पंडित ऋषिराम ने अगले दिन कुछ मिशनरियों को राहत कार्य करने के लिए मलबार भेजा। लाला खुशहाल चंद खुरसांड (बाद में आर्य समाज के एक प्रतिभाशाली भिक्षु महात्मा आनंद स्वामी के रूप में जाने गए), पंडित मस्तान चंद और महात्मा सावनमल भी मलबार आए। उनके साथ डीएवी कॉलेज, लाहौर, वेंकटचलमैयार के मलयाली विद्वान वेदबंधु शर्मा भी थे। वेदबंधु शर्मा पंडित ऋषिराम के सहायक और अनुवादक थे, जिनके पास समान शरीर, ध्वनि और वाकपटुता और एक बड़े दर्शकों को प्रभावित करने का असाधारण साहस था। आर्य समाज ने कोषीकोड और पोन्नानी में केंद्र स्थापित किए। वे शुद्धिकरण के मुख्य केंद्र भी थे। इसके अलावा, उन्होंने दंगा प्रभावित क्षेत्रों में बहादुरी से प्रवेश किया और पीड़ितों को दवा, भोजन और कपड़े उपलब्ध कराए। वेलिनेषी आर्य समाज की आगामी पुस्तक '1921- मलबारुं आर्यसमाजवुं' में इसका वर्णन किया है।

मोपला दंगों से संबंधित राहत कार्य के बाद, आर्य समाज ने अपना ध्यान सामाजिक पुनर्जागरण गतिविधियों पर केंद्रित कर दिया।

मोपला दंगों के बाद हुए सेवा कार्यों के कारण बना था आर्य समाज केरल

One Hindu family forcibly converted—Re-admitted by Arya Samaj with the Society Workers on the sides.

.....केरल के वर्तमान सामाजिक वातावरण में आर्य समाज का बहुत महत्व है। हिंदू समाज आज भीतर और बाहर से अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रहा है। वेदों को सर्वोच्च नियम मानकर इन आंतरिक चुनौतियों का कुछ हद तक सामना किया जा सकता है। ऐसा करने का तरीका वैदिक सत्यों का अध्ययन और अध्यापन करना है। बाहरी चुनौतियां दूसरे धर्मों, नास्तिक धर्मों और शहरी नक्सलियों से आती हैं। इनसे लड़ने के लिए युवाओं को तैयार रहने की जरूरत है।.....

कलपात्ती आंदोलन - पालक्काड़ जिले के कलपात्ती गांव में प्राचीन विश्वनाथ मंदिर के पास अग्रहारम की गलियों में निचली जातियों के चलने के अधिकार की मांग को लेकर कलपात्ती आंदोलन एक लोक प्रसिद्ध आंदोलन था। वेदबंधु शर्मा के नेतृत्व में आर्य समाज ने इस प्रथा के खिलाफत आंदोलन किया। वेदबंधु शर्मा ने तथाकथित अवतारों के एक समूह के साथ वहां एक मार्च निकाला। ब्राह्मणों ने एक समूह के रूप में आकर उसका सामना किया। भूखी महिलाएं हंगामे के बीच सड़कों पर उतरीं। वेदबंधु ने चाकू निकाला। रास्ता रोकने आए नेता को चाकू मार दिया। ब्राह्मण डर के मारे भाग गए। मार्च फिर बिना किसी बाधा के आगे बढ़ा। एक प्रारंभिक आर्य समाज नेता, पी. केशव देव ने अपनी आत्मकथा 'विपक्ष' में इसका वर्णन किया है।

वाइकम सत्याग्रह - वाइकम सत्याग्रह में स्वामी श्रद्धानंद और आर्य समाज की भूमिका सुनहरे अक्षरों में लिखी गई है। तथाकथित निचली जातियों को वैकम महादेव मंदिर और आसपास की सार्वजनिक सड़कों पर जाने का अधिकार नहीं था। लेकिन साथ ही, मुसलमान और ईसाई उस रास्ते से बिना रुके यात्रा कर सकते थे। इस तरह के अन्याय के कारण, कई निचली जातियाँ इस्लाम और ईसाई धर्म अपना रही थीं। आर्य समाज ने उन्हें शुद्ध किया और यज्ञोपवीत पहनाकर वापस लाने लगे। इस भेदभाव ने राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया। स्वामी श्रद्धानंद ने उसके बाद हुए प्रसिद्ध सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया। लेकिन हमारे इतिहास की किताबों में ऐसा कुछ नहीं मिलता।

आरंभिक आर्य समाज कार्यकर्ता - 1920 के दशक में महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज से प्रेरित होकर, केरल में कई सामाजिक कार्यकर्ता आंदोलन से आकर्षित हुए। पी. केशव देव, नारायण देव, अभय देव, आर.सी दास और राम कृष्ण दास सब इसमें हैं।

कोषीकोड आर्य समाज के बुद्धसिंह ने सराहनीय सेवा की। 1947 में, वह वह था जिसने उन्नीन साहिब और उसके परिवार को शुद्धिकरण के माध्यम से वैदिक धर्म में लाया। उनकी धर्मपत्नी सुगंधी बाई आर्य भी बहुत सक्रिय थीं। वेदबंधु शर्मा के समकालीन आर्य भास्करजी, आचार्य नरेंद्र भूषण, कीजानेल्लूर परमेश्वरन नंबूतिरी, वेलायुध आर्य, ए.पी. उपेंद्र और अन्य। उनमें से अधिकांश ने उत्तर भारत में आर्य समाज के गुरुकुलों में अध्ययन किया है और केरल में वैदिक साहित्य का प्रसार और अध्ययन कक्षाएं संचालित करके लोगों को वैदिक पथ पर लाने के लिए कड़ी मेहनत की है। उन्होंने कड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए प्रचार किया। कई अभी भी अज्ञात के रूप में देखे जाते हैं। हम उन सभी को इस 100वीं वर्षगांठ पर सम्मानपूर्वक नमन करते हैं।

समकालीन केरल में आर्य समाज - केरल के वर्तमान सामाजिक वातावरण में आर्य समाज का बहुत महत्व है। हिंदू समाज आज भीतर और बाहर से अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रहा है। वेदों को सर्वोच्च नियम मानकर इन आंतरिक चुनौतियों का कुछ हद तक सामना किया जा सकता है। ऐसा करने का तरीका वैदिक सत्यों का अध्ययन और अध्यापन करना है। बाहरी चुनौतियां दूसरे धर्मों, नास्तिक धर्मों और शहरी नक्सलियों से आती हैं। इनसे लड़ने के लिए युवाओं को तैयार रहने की जरूरत है। अध्ययन कक्षाएं और प्रचार गतिविधियां नियमित रूप से आयोजित की जानी चाहिए। उन शिक्षकों को ढालने के लिए और गुरुकुल होने चाहिए जो उन्हें संचालित करने में सक्षम हों। वेलिनेझी आर्य समाज के नेतृत्व में कारलमण्णा वेद गुरुकुलम् पिछले पांच वर्षों से ब्रह्मचारी तैयार कर रहा है। इस कम समय में हमने बहुत कुछ हासिल किया है। संगोपांग वेदों के अध्ययन के साथ, केरल शैली में वैदिक मंत्रोच्चारण और श्रौतयज्ञ करने का प्रशिक्षण भी यहां जाति या पंथ के बावजूद आयोजित किया जाता है।

आर्य समाज और मोपला दंगों की 100वीं वर्षगांठ के अवसर पर केरल में आर्य समाज अन्य हिंदू संगठनों के सहयोग से एक दीर्घकालिक कार्य योजना तैयार कर रहा है।

- के एम राजन
आर्य प्रचारक अधिष्ठाता
वेद गुरुकुल कारलमण्णा, केरल

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व
इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

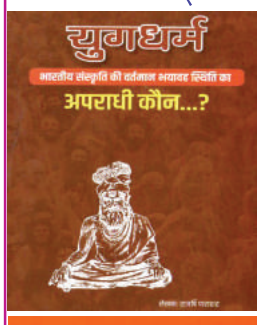

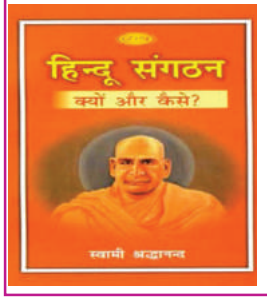

पुस्तक
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें:
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-110001
मो. 9540040339
011-23360150

बंगाल हिंसा : लोकतंत्र में बदले की कैसी राजनीति

आप सब जानते हैं कि प.बंगाल में विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद हिंसा हुई। इसमें डरे, सहमे करीब 300-400 भाजपा के कार्यकर्त्ता बंगाल से सुरक्षा की आस में असम पहुंचे हैं। बीजेपी नेता कैलाश विजयवर्गीय ने कई विडियो ट्वीट कर कहा है कि भाजपा कार्यालय और कार्यकर्त्ताओं पर हमला किया जा रहा है। बंगाल जल रहा है। ममता बनर्जी को शर्म आनी चाहिए। इससे पहले 3 मई को एक ट्वीट में उन्होंने लिखा था कि ममता की जीत के बाद उनके कार्यकर्त्ता जश्न मना रहे हैं और भाजपा कार्यकर्त्ताओं के घर तोड़ रहे हैं।अब तक दर्जनों भाजपा कार्यकर्त्ताओं की हत्या हो चुकी है।

बंगाल के हालात पर हम दुखी हैं, द्रवित हैं। सभी जगह कहा भी जा रहा है कि बंगाल कश्मीर बन गया लेकिन ये जो आज हो रहा है ये कोई 1990 का भारत नहीं है, न आज केंद्र में वीपी सिंह सरकार है और न मुफ्ती मोहमम्द सईद देश के गृहमंत्री हैं कि कश्मीर से जान बचाकर हिन्दू दूसरे राज्यों में शरण लें। ये आज का भारत है केंद्र में एक मजबूत सरकार और गृहमंत्री है, जिसके हाथ में सभी शक्तियाँ मौजूद हैं अगर फिर भी बंगाल में ये सब हो रहा है तो इतिहास इसका जिम्मेदार किसे ठहराएगा?

इतिहास ममता से सवाल नहीं करेगा क्योंकि जिस समय ये सब हो रहा था उस समय ममता ने मुख्यमंत्री पद की शपथ नहीं ली थी। न इतिहास रवीश कुमार का चैनल देखेगा, न इतिहास बरखा दत्त और राजदीप सरदेसाई के ट्वीट पढ़ेगा और न इतिहास राहुल गाँधी से प्रश्न करेगा। जो आज मारे जा रहे हैं वे केवल हिन्दू ही नहीं, भाजपा के कार्यकर्त्ता भी हैं। जो आज अपना घर बार छोड़कर दूसरे राज्यों में शरण लेने को मजबूर हैं, वे किससे अपनी गुहार लगाये? ममता से? लेकिन भला वह क्यों बोलेगी, उसके गुंडे तो खुद इसके जिम्मेदार हैं। तो आप बताये आज उनकी रक्षा का दयित्व किसका है?

अगर सरकार को कड़ा कदम उठाने लायक सबूत चाहिए तो ऐसा सिर्फ हम नहीं बल्कि पश्चिम बंगाल के सहप्रभारी बीजेपी नेता अरविंद मेनन भी कह रहे हैं कि पश्चिम बंगाल में कानून व्यवस्था की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं और पश्चिम बंगाल की पुलिस और सरकार मूक दर्शक बन कर बैठी हुई है। राजनीतिक जीत का उत्सव ममता बनर्जी लाशों और रक्त से मना रही हैं, पूरे बंगाल में आतंक का माहौल है। दिलीप घोष बीजेपी पश्चिम बंगाल के अध्यक्ष हैं। उनका कहना है कि सोनारपुर उत्तर विधान सभा क्षेत्र के बूथ नंबर 24 के 20 से अधिक घरों में तोड़फोड़ की गई है। लोग बेघर हो गए हैं और बुरे हाल में हैं।

सिर्फ इतना ही नहीं न्यूज एजेंसी एएनआई की एक रिपोर्ट के अनुसार भाटापारा के घोषपारा रोड में बीजेपी ऑफिस और कुछ दुकानों पर अज्ञात लोगों ने हमला किया। इलाके में बम भी फेंके गए हैं। एक स्थानीय ने बताया है कि तृणमूल कांग्रेस के उपद्रवियों ने मेरी दुकान लूट ली। यहां कम से कम 10 बम फेंके गए हैं। न्यूज एजेंसी एएनआई का ट्वीट देखिए। ट्वीट के मुताबिक आसनसोल बीजेपी ऑफिस में तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं ने तोड़फोड़ की।

इसके अलावा बीजेपी के छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का कहना है कि तृणमूल कांग्रेस के 15-20 गुंडों ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् कोलकाता ऑफिस पर हमला किया। तोड़फोड़ की, कार्यकर्त्ताओं के साथ मारपीट करने के बाद टीएमसी के गुंडों ने जानबूझकर हनुमान और काली मां की मूर्तियों को भी तोड़ा, इस ट्वीट से समझ जाइये कि हनुमान जी और काली मां की मूर्तियों को तोड़ने वाले कौन लोग होंगे? क्या वे हिन्दू हो सकते हैं?

चलो एक पल को मान लिया जाये कि ये सिर्फ बीजेपी और उससे जुड़े संगठनों के दावे और ट्वीट हैं। लेकिन हिंसा के नंगे नाच पर खुद वामपंथी भी कराह उठे हैं। लेफ्ट पार्टियों से जुड़े लोगों ने भी तृणमूल कांग्रेस पर आरोप लगाए हैं कि उनके समर्थक और कार्यकर्त्ताओं ने तोड़फोड़ की है और लोगों को मारा है। सीपीआईएम के बड़े नेता सीताराम येचुरी ने एक ट्वीट में कहा है कि क्या ये रिपोर्ट्स तृणमूल कांग्रेस के 'विजय उत्सव' में भीषण हिंसा की हैं? निंदनीय, इसका विरोध किया जाएगा। टीएमसी महामारी से लड़ने के बजाए इस तरह से तबाही फैला रही है।

सिर्फ सीताराम येचुरी ही नहीं, आइशी घोष का नाम आपने सुना होगा जेएनयू छात्र संघ की अध्यक्ष। वही आइशी घोष जो अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और बीजेपी की कट्टर आलोचक, विरोधी और टुकड़े टुकड़े गैंग की सदस्या है। उस आइशी घोष ने भी कई भयावह तस्वीरें पोस्ट की और कहा है कि तृणमूल कांग्रेस को कम से कम जनादेश का सम्मान करना चाहिए। लोगों ने आपको काम करने के लिए चुना है न कि हमारे लोगों पर हिंसा करने के लिए। आपके पार्टी से जुड़े लोग हमारे घरों और पार्टी ऑफिस में हमला

- *शेष पृष्ठ 6 पर*

प्रथम पृष्ठ का शेष

चुनावों के पश्चात् बंगाल में .....

बार छोड़ने पर मजबूर हो गए, चारों तरफ भय,आतंक और निराशा का वातावरण है। ऐसे में एक तरफ कोरोना और दूसरी तरफ असामाजिक तत्वों से जान माल का खतरा, जाएं तो जाएं कहां? आज वहां कानून व्यवस्था का नामोनिशान नहीं है।

बंगाल हिंसा के मामले में 3 जून, 2021 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एवं सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी ने विभिन्न संगठनों के 12 प्रतिनिधियों ने दिल्ली के उपराज्यपाल से भेंट की। भेंट करने वाले में पूर्व न्यायाधीश एस. एन. ढींगरा, एम. सी. गर्ग, मेजर जनरल ध्रुव कटोच, एयर वाइस मार्शल एच. पी. सिंह, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, रविदास मन्दिर देव नगर के अध्यक्ष श्री गोपाल किशन एवं राजीव मित्तल सहित दिल्ली के कई पूर्व न्यायाधीश, पूर्व सैन्य अधिकारी, लोक सेवक, व्यावसायिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र के प्रतिनिधि सम्मिलित रहे।

प्रतिनिधि मंडल ने महामहिम उपराज्यपाल श्री अनिल बैजल जी के समक्ष 169 महानुभावों द्वारा हस्ताक्षरित ज्ञापन पत्र रखते हुए 10 सूत्री मांग रखते हुए दोषियों पर कार्यवाही करने की मांग की। ज्ञापन पत्र में की गई 10 मांगों में प्रमुख मांगे निम्न प्रकार हैं -

- ★ हत्या, बलात्कार, लूट की वारदातों में शामिल अपराधिक तत्त्वों पर कड़ी कार्यवाही हो और मामले दर्ज किए जाएं।
- ★ दोषियों की तत्काल गिरफ्तारी हो।
- ★ सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत न्यायाधीश की अध्यक्षता में एस. आई.टी. का गठन किया जाए।
- ★ फास्ट ट्रैक कोर्ट का गठन करके हिंसा से जुड़े मामलों की त्वरित सुनवाई हो।
- ★ पश्चिम बंगाल की सीमा बंगलादेश से लगी हुई है। ऐसे में अवैध गतिविधियों को शह देने वालों से जुड़े संदिग्ध मामलों की जांए एन. आई.ए. को सौंपी जाए।
- ★ अपने कर्त्तव्यों का ठीक से निवर्हन न करने वाले अधिकारियों पर सख्त अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाए।
- ★ हिंसा में जान गंवाने वालों को मुआवजा प्रदान किया जाए। पीड़ित परिवारों की सुरक्षा का बन्दोबस्त किया जाए।
- ★ सार्वजनिक सम्पत्ति का नुकसान करने वालों से जुर्माना वसूल किया जाए।
- ★ केन्द्र पूरे मामले पर ससत नजर बनाए रखे।

पश्चिम बंगाल में हिंसा पर एलजी को सौंपा ज्ञापन

नई दिल्ली, 3 जून (नवोदय टाइम्स) : पश्चिम बंगाल में चुनाव के बाद जारी राजनीतिक हिंसा की गूंज दिल्ली में भी सुनाई दे रही है। बारह सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल ने वीरवार को पूर्व न्यायाधीश, रिटायर्ड सैन्य अधिकारी सहित विभिन्न वर्ग के प्रसिद्ध 169 लोगों ने हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन दिल्ली के एलजी अनिल बैजल को सौंपा। ज्ञापन के जरिए दस मुद्दों को रखते हुए उचित कार्रवाई की मांग भी की गई।

ज्ञापन में कहा कि पश्चिम बंगाल में चुनाव परिणाम के बाद 25 लोगों की बेरहमी से हत्या कर दी गई है। इनमें बड़ी संख्या में महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। इसी तरह राज्य में 15,000 से अधिक हिंसा के मामले सामने आए

प. बंगाल की हिंसा में 25 की हत्या

हैं। राज्य के 16 जिले हिंसा से बुरी तरह प्रभावित हैं। इसकी वजह से चार से पांच हजार लोग राज्य छोड़कर दूसरे राज्य की ओर जाने को मजबूर हुए हैं। ज्ञापन में कहा कि हिंसा का शिकार होने वालों में बड़ी संख्या गरीब और अनुसूचित जाति वर्ग के लोग शामिल हैं।

ज्ञापन सौंपने वालों में पूर्व न्यायाधीश एसएन ढिंगरा, एमसी गर्ग, मेजर जनरल ध्रुव कटोच, एयर वाइस मार्शल एचपी सिंह, आर्य समाज से विनय आर्य, रविदास मंदिर देव नगर के अध्यक्ष गोपाल किशन एवं राजीव मित्तल समेत दिल्ली के कई पूर्व न्यायाधीश, पूर्व सैन्य अधिकारी, लोक सेवक, प्रोफेशनल्स, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र के 169 व्यक्तियों ने हस्तक्षर किए हैं।

ये हैं दस प्रमुख मांगें

हत्या, बलात्कार, लूट की वारदातों में शामिल तत्वों पर कड़ी कार्रवाई हो और मामले दर्ज किए जाएं।

तत्काल दोषियों की गिरफ्तारी हो।

सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में एसआईटी का गठन किया जाए।

फास्ट ट्रैक कोर्ट का गठन कर हिंसा से जुड़े मामलों की त्वरित सुनवाई हो।

पश्चिम बंगाल की सीमा बांग्लादेश से लगी हुई है। ऐसे में अवैध गतिविधियों को शह देने वालों से जुड़े संदिग्ध मामलों की जांच एनआईए को सौंपी जाए।

अपने कर्तव्यों का ठीक से निर्वहन न करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों पर अनुशासनात्मक कड़ी कार्रवाई की जाए।

हिंसा में जान गंवाने वालों को मुआवजा प्रदान किया जाए।

पीड़ित परिवारों की सुरक्षा का बंदोबस्त किया जाए।

सार्वजनिक संपत्ति का नुकसान करने वालों से जुर्माना वसूला जाए।

केंद्र पूरे मामले पर सतत नजर बनाए रखे।

आर्यसमाज के कोरोना योद्धओं का सम्मान समारोह सम्पन्न : लगभग 35 दिनों से दे रहे थे सेवाएं

15 जून 2021। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज के सम्मनित अधिकारियों और सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने कोरोना काल मैं अपनी जान की परवाह न करते हुए आर्य समाज द्वारा संचालित सेवा प्रकल्पों में समर्पण भाव से कार्य किया, इसके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने सभी उन कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया जिन्होंने कोरोना काल में चाहे भोजन पैकिंग की व्यवस्था हो, भोजन वितरण की व्यवस्था हो, या फिर भोजन तैयार करवाने की व्यवस्था हो, इसके साथ-साथ श्मशान घाट में जलती चिताओं के पास जाकर सामग्री समर्पण की व्यवस्था हो, या जो लोग कोरोना के कारण अचानक चले गए उनके परिवार के लोगों को पानी पिलाने की व्यवस्था हो ऑक्सीजन कंसंट्रेटर वितरण का कार्य हो, इन समस्त सेवाओं जो लोग अग्रणी रहे, जिन्होंने पहले स्वयं ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर चलाना सीखा और फिर दूसरे लोगों को जो जरूरतमंद थे उनको समझाया कि कैसे इसका प्रयोग करें, इसके साथ साथ जो सैनिटाइजेशन का कार्य कर रहे हैं और जिन्होंने यज्ञ के द्वारा पर्यावरण शुद्धि का कार्य किया सभी कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री योगेंद्र खट्टर जी दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी आदि अनेकानेक महानुभाव उपस्थित थे सभी ने रणबांकुरे को अपना स्नेहिल आशीर्वाद दिया और सब को शुभकामनाएं दी। श्री विनय आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह कोई सरल कार्य नहीं है जब लोग अपने घर से निकलने के लिए भी डरते थे आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने अपनी और अपने परिवार की जान की परवाह न करते हुए मानवता की सेवा की। इसके लिए इन सब को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।श्री धर्मपाल आर्य जी ने सबको शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मुझे गर्व है अपने इन कार्यकर्ताओं के ऊपर, जिन्होंने दिलोजान मानव समाज की सेवा की, आज अगर मानवता जिंदा है तो ऐसे सेवा भावि लोगों के कारण जिंदा है। ऐसे लोग ही सेवा और समर्पण के उदाहरण बनकर मानवमात्र के दिल की गहराइयों में बसा करते हैं,मैं सभी कार्यकर्ताओं को बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। आर्य समाज अपने लक्ष्य और उद्देश्य मानव सेवा का सभी विस्तार करता रहा है, सेवा पथ पर आगे बढ़ता रहा है और जब तक यह वैश्विक महामारी पुराना नष्ट नहीं होती तब तक मानव सेवा के कार्य करता रहेगा। श्री सुरेश चंद्र गुप्ता जी, श्री सतीश चड्ढा जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी,श्री योगेश आर्य जी इत्यादि अधिकारी वर्ग ने सभी कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद और शुभकामनाएं दी।

रतन चंद आर्य पब्लिक स्कूल सरोजिनी नगर का स्वर्ण जयंती समारोह सम्पन्न

5 मई 2021 बुधवार को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित रतनचंद आर्य पब्लिक स्कूल सरोजिनी नगर के 50 वर्ष पूरे होने पर विद्यालय का स्वर्ण जयंती समारोह लाकडाउन के कारण आन लाइन मनाया गया। 5 मई 1971 बुधवार को इस विद्यालय की स्थापना प्रसिद्ध समाजसेवी दानवीर आर्य समाज के अनन्य भक्त श्री रतनचंद सूद एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सत्यवती सूद के कर कमलों द्वारा की गई। यह विद्यालय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध है। प्राचीन वैदिक मूल्यों एवं आधुनिक शिक्षा पद्धति पर आधारित यह विद्यालय दक्षिण दिल्ली के प्रसिद्ध विद्यालयों में से एक है। इस अवसर पर आर्य आडिटोरियम ईस्ट आफ कैलाश में स्वर्ण जयंती समारोह को धूमधाम से मनाने का निश्चय किया गया था जिसमें विद्यालय के 50 वर्षों की उपलब्धियाँ एवं संस्मरण पर आधारित स्मारिका विमोचन एवं पूर्व छात्र समारोह कार्यक्रम भी आयोजित हुए।

कोरोना के तीव्र प्रभाव एवं लाकडाउन के कारण इस कार्यक्रम को निरस्त कर दिया गया और इसके विकल्प में आन लाइन समारोह मनाया गया। जिसमें श्री योगेश मुंजाल, श्रीमती प्रेम खन्ना (सुपुत्री स्व श्री रतनचंद सूद), विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मैनेजिंग कमेटी के चेयरमैन श्री राजीव चौधरी, उप प्रधान श्री नीरज आर्य, प्रबंधक तृप्ता शर्मा, कोषाध्यक्ष श्रीपाल सिंह जी, प्रिं आभा खंडूरी, शिक्षक एवं अभिभावक वर्ग व छात्र-छात्राएँ सम्मिलित थे। आचार्य विक्रम जी द्वारा यज्ञ करवाया गया। विनय आर्य, श्रीमती प्रेम खन्ना, राजीव चौधरी जी द्वारा शुभकामनाएं संदेश दिए गए। योगेश मुंजाल, नीरज आर्य, अनु वासुदेव, प्रिं. आभा खंडूरी ने बधाई एवं शुभकामनायें दी और तृप्ता शर्मा ने सबका धन्यवाद करते हुए कहा कि मानव को मानव बनाने का कार्य आर्य समाज के विद्यालयों में ही सम्भव है। इसलिए बच्चों में संस्कार बहुत जरूरी है।

- मीनाक्षी सक्सेना, कार्यक्रम संचालक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनाओं के लिए सहयोग/दान अब और भी आसान: QR कोड स्कैन करते ही होगा भुगतान

आपको जानकर हर्ष होगा कि बैंक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को डिजिटल पेमेंट हेतु कोड़ जारी किया गया है। अब आप किसी भी पेमेंट माध्यम - पेटीएम, फोन पे, गूगल पे, मास्टर/वीजा रुपये, भीम पे - से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किसी भी योजना/प्रकल्प के लिए सहयोग एवं दान राशि का भुगतान केवल मात्र क्यू.आर. कोड को स्कैन करके कभी भी-कहीं से भी कर सकते हैं।

आप इस कोड के माध्यम अपने आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियों का भी भुगतान कर सकते हैं।

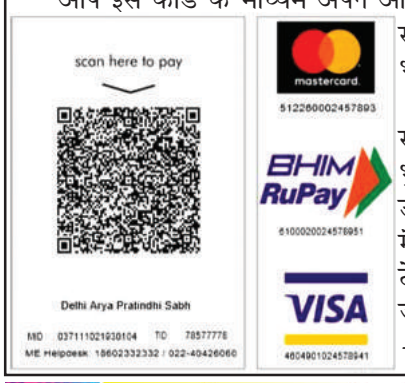

आप द्वारा इसके माध्यम से भेजी गई राशि तत्काल सभा को प्राप्त हो जाएगी। कृपया भुगतान करते ही आपके पास जो मैसेज आए उसका स्क्रीन शॉट लेकर अथवा सीधे उस मैसेज को 9540040388 पर व्हाट्एप्प अथवा टेलिग्राम कर दें, जिससे आपको तुरन्त रसीद जारी की जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

The Escape from Home

When Mool Shankar left home he was afraid lest he should be followed and be caught. So he did not go along the main road but chose the bypaths. All this was something new for him, but he did not lose heart. On the way he had many strange experiences. Once he came across a group of fakirs. They all seemed to be holy men and he naturally took very kindly to them. He confided in them. But they were good-for-nothing people from whom he should have expected no help. They robbed him of his gold ring and all the little money he had. "How can you repounce the world," they said, "as long as you possess these things? To give them up is the first step towards self knowledge."

After many days' journey Mool Shankar came to another small place. There he met a Brahmchari. This was a man who had taken a vow of celibacy and was never going to marry. As soon as he saw Mool Shankar he began to take an interest in him. Soon he made him also take the vow that he had himself taken. Thus Mool Shankar became a Brahmchari. He cast of this ordinary clothes and put on a yellow shirt and a dhoti. In his hands he carried a long stick and a wooden bowl for alms. He was then called shudh Chetan Brahmchari.

After a few days Shudh Chetan left this place. Soon he came upon some sadhus. He learnt that a big fair was to be held at Sidpur. This fair, he was told, would be attended by many noble sadhus and sanyasis. He thought this would be a big chance in his life. Perhaps he would meet there some noble persons who would show him the right path to truth and virtue.

So he turned his steps towards Sidpur. But before he reached that place he met a sadhu who knew him and the members of his family. This, he at once thought, would mean trouble for him. And it happened exactly as he had thought it would. The sadhu on reaching Mool Shankar's native place told his father all about his son's movements, and asked him to bring him back.

...On reaching that place he went to the very temple where his son was staying. As soon as he saw him in the garb of a beggar, he felt very upset. His face flushed crimson with anger and he flew into a temper. Then he took his son to task for what he had done. "You have brought disgrace upon your family," he said. "You are a blot on our name." He broke his son's bowl into pieces, and tore his 'clothes into tatters. Then he gave him new clothes to wear. After this he took him to the place where he himselfwas staying. He told the sepoys to keep a strict watch on him. "Be careful," he said "lest the boy should run away again."...

Mool Shankar 's father set out immediately for Sidpur accompanied by four sepoys. On reaching that place he went to the very temple where his son was staying. As soon as he saw him in the garb of a beggar, he felt very upset. His face flushed crimson with anger and he flew into a temper. Then he took his son to task for what he had done. "You have brought disgrace upon your family," he said. "You are a blot on our name." He broke his son's bowl into pieces, and tore his 'clothes into tatters. Then he gave him new clothes to wear. After this he took him to the place where he himselfwas staying. He told the sepoys to keep a strict watch on him. "Be careful," he said "lest the boy should run away again."

Thus Shudh Chetan was caught again. But he was not one of those people who easily change their minds. He was determined to find the way to truth and to acquire real peace and happiness. He was equally determined not to go back home. So he continued to think out some plans for his escape.

He soon left Sidpur in the company of his father and his sepoys. Since the journey was long, it took several days. But only a few days had passed when he got a change to escape. One night the sepoy who was keeping watch over him went to sleep. As soon as Shudh Chetan saw this he seized the opportunity to escape. He did not pause or look behind till he had gone about a mile. He came to a garden, in the middle of which stood a magnificent temple. In front of it was a big, spreading banyan tree. Shudh Chetan realized in a minute that the tree would be a good hiding-place. So he climbed to the top of it, and from there jumped down on to the dome ofthe temple. There he lay hidden.

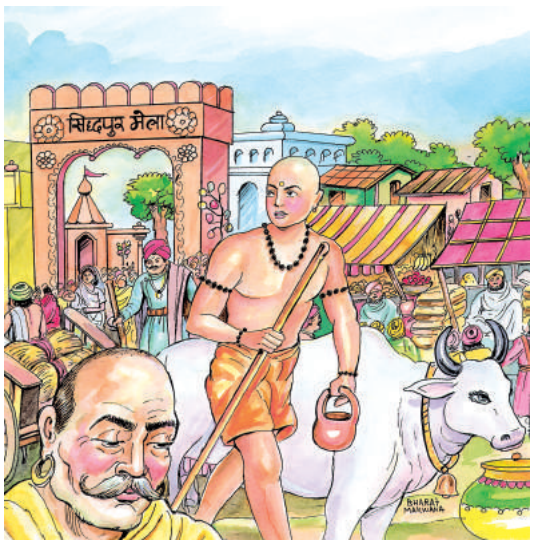

After sometime the sepoy woke up. To his surprise he found that the young man had fled, He at once woke the other sepoys and Shudh Chetan's father from their sleep. As soon as his father heard of it, he said, "There is no time to lose now. Let us search for him at once." So off they went. As chance would have it, they came to the very garden where Shudh Chetan was hiding. But though they searched every nook and corner of it, they could not find him anywhere. At last they left, very disappointed.

By now Shudh Chetan was hungry and thirsty and felt sleepy, but he remained in hiding till it was dark. Then he got down from the temple and left the place by following a narrow bypath.

To be continued......

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

साक्षिप्रकरणम्

गतांक से आगे –

	संस्कृत	हिन्दी
260.	भोः साक्षिन्! त्वमत्रा किञ्चिज्जानासि न वा?	हे साक्षी! तू इस विषय में कुछ जानता है वा नहीं?
261.	जानामि।	जानता हूं।
262.	यादृशं जानासि तादृशं सत्यं वद।	जैसा जानता है वैसा सच कह।
263.	सत्यं वदामि।	सत्य कहता हूँ।
264.	अस्मादनेन मत्समक्षे सहस्रं मुद्राः गृहीताः।	इससे इसने मेरे सामने सहस्र रुपये लिये थे।
265.	भो भृत्य! तं शीघ्रमानय।	औ नौकर! उसको जल्दी ले आ।
266.	आनयामि।	लाता हूं।
267.	गच्छ राजसभायां राज्ञा त्वमाहूतोऽसि।	चल राजसभा में राजा ने तुझको बुलाया है।
268.	चलामि।	चलता हूं।
269.	भो राजन्नुपस्थितस्सः।	हे राजन्! वह आया है।
270.	त्वयाऽस्य ऋणं किमर्थं न दीयते?	तू इसका ऋण क्यों नहीं देता?
271.	अस्मिन् समये तु मम सामर्थ्यं नास्ति षण्मासानन्तरं दास्यामि।	इस समय तो मेरा सामर्थ्य नहीं है परन्तु छः महीने के पीछे दूंगा।
272.	पुनर्विलम्बं तु न करिष्यसि?	फिर देर तो न करेगा?
273.	महाराज! कदापि न करिष्यामि।	महाराज! कभी न करूंगा।
274.	अच्छ गच्छ धनपाल! यदि सप्तमे मास्ययं न दास्यति तर्ह्येनं निगृह्य दापयिष्यामि।	अच्छा जाओ धनपाल! जो यह सातवें महीने में न देगा तो इसको पकड़ के दिला दूंगा।
275.	अयं मम शतं मुद्रा गृहीत्वाऽधुना न ददाति।	यह मेरे सौ रुपये लेके अब नहीं देता।
276.	किं च भो यदयं वदति तत् सत्यं न वा?	क्योंजी जो यह कहता है वह सच है वा नहीं?
277.	मिथ्यैवाऽस्ति।	झूठ ही है।
278.	अहं तु जानाम्यपि नाऽस्य मुद्रा मया कदा स्वीकृताः।	मैं तो जानता भी नहीं कि इसके रुपये मैंने कब लिये थे।

क्रमशः – साभार :– संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित–दिल्ली संस्कृत अकादमी)

पृष्ठ 4 का शेष

बंगाल हिंसा : लोकतन्त्र में बदले ....

कर रहे हैं, इसे किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

खुद सीपीआईएम पश्चिम बंगाल ने एक ट्वीट में कहा है कि पूर्वी बर्दवान के जमालपुर के नाबग्राम के 52 साल की कार्यकर्त्ता काकली खेत्रपाल की रविवार को हत्या कर दी गई है। तृणमूल सदस्यों ने चुनावी जश्न मनाते हुए उसके घर में घुसकर उसे धारदार हथियार से मार दिया। सीपीआईएम के अनुसार काकली को उस वक्त मारा गया जब वह खाना बना रही थी।

क्या हिंसा रोकने के लिए ये रिपोर्ट और विडियो कम है? लेकिन गृह मंत्रालय ने पश्चिम बंगाल सरकार से राज्य में विपक्षी राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं को टारगेट करते हुए चुनाव नतीजों के बाद की हिंसा पर एक रिपोर्ट मांगी है। अब कब रिपोर्ट आएगी और कब कार्यवाही होगी, इसका किसी को कुछ नहीं पता।

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने ट्वीट कर बताया है कि पीएम नरेंद्र मोदी ने कॉल किया और कानून व्यवस्था की गंभीर स्थिति पर अपनी चिंता व्यक्त की है। इसके अलावा पश्चिमी दिल्ली से बीजेपी सांसद प्रवेश साहिब सिंह वर्मा ने ममता बनर्जी को टैग करते हुए ट्वीट कर लिखा– टीएमसी के गुंडो ने चुनाव जीतते ही हमारे कार्यकर्त्ताओं को जान से मारा, भाजपा कार्यकर्त्ताओं की गाड़ियां तोड़ी, घर में आग लगा रहे हैं। याद रखना टीएमसी के सांसद, मुख्यमंत्री, विधायकों को दिल्ली में भी आना होगा, इसको चेतावनी समझ लेना, चुनाव में हार–जीत होती है, मर्डर नहीं।

लेकिन ममता का ट्वीट समझिये कैसे वे इसे जायज सा ठहरा रही हैं लिखती है कि 'मैं सभी लोगों से अपील करती हूं कि शांति बनाए रखें और किसी भी तरह की हिंसा में न शामिल हों। हम जानते हैं कि बीजेपी और सेंट्रल फोर्सेज ने हमें बहुत प्रताड़ित किया है।'

बहराल, ऐसे में हम क्या कहें, सिर्फ इतना कह सकते हैं ममता की शपथ हो गयी, लेकिन उन लोगों की सुरक्षा बहुत जरूरी है, जिन लोगों ने खुलकर जय श्रीराम के नारे लगाये और उन लोगों को दंड जरूर मिलना चाहिए जो आज उन रामभक्तों पर हमला कर रहे हैं। इस कारण आज केंद्र द्वारा उचित कार्यवाही करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण जी का एक कथन पुनः फिर प्रासंगिक हो जाता है–

"जब तक दुर्योधन जीवित है तब तक आप विजय से उतना ही दूर हो जितना युद्ध के पहले दिन थे।"

– राजीव चौधरी

कोरोना काल में दिवंगत आत्माओं को आर्यसमाज की ओर से अश्रुपुरित श्रद्धांजलि

शोक समाचार

स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती का निधन

वेद, दर्शन, व्याकरण एवं विज्ञान के विद्वान सौम्य सरल स्वभाव के धनी वेद मन्दिर उत्तर काशी के संचालक एवं सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी के पूज्य चाचाजी स्वामी वेदानन्द सरस्वती जी का 12 जून, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 15 जून, 2021 को ऑनलाइन सम्पन्न हुई।

श्री रोहित चौधरी का निधन

आर्यसमाज विवेक विहार के कर्मठ एवं उत्साही महामन्त्री श्री रोहित चौधरी जी का 27 मई, 2021 को दोपहर लगभग 1:40 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री दिनेश शर्मा जी का निधन

आर्यसमाज जहांगीर पुरी के प्रधान श्री दिनेश शर्मा जी का दिनांक 4 जून की प्रात: 2:30 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ आजादपुर शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 14 जून को उनके आवास पर सम्पन्न हुई।

श्री संजय जी को मातृशोक

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के एकाउंटेंट श्री संजय जी की पूज्य माता श्रीमती किरण देवी जी का दिनांक 30 मई, 2021 को 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 3 जून को सम्पन्न हुई।

श्री करतार सिंह जी का निधन – महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ब्रह्म आश्रम संस्कृत महाविद्यालय राजघाट नरौरा (बुलन्दशहर) के प्राचार्य आचार्य सोमपाल शास्त्री जी के पूज्य पिता श्री करतार सिंह जी का दिनांक 26 मई, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 30 मई, 2021 को सम्पन्न हुई।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, नई दिल्ली की शाखा कुशलगढ़, बांसवाड़ा, आर्यसमाज बांसवाड़ा, वेद मन्दिर बांसवाड़ा, आर्यसमाज गंगडतलाई, आर्यसमाज बागीदौरा आनन्दपुरी सम्बन्धित महानुभाव

श्री गौतम लाल मीणा – विधायक, धरियावाद, जिला प्रतापगढ़ (राजस्थान)

श्री राईया मीणा – पूर्व विधायक आसपुर, जिला डूंगरपुर

श्री कन्हैया लाल परमार – प्रधान, आर्यसमाज बांसवाड़ा

श्री सवजी डोडियार – महर्षि दयानन्द सेवाश्रम बांसवाड़ा के उपाध्यक्ष श्री मोतीसिंह जी के पूज्य पिताजी

श्री मिठिया राणा – मुख्याध्यापक, राजकीय उच्च मा.विद्यालय आमलिपाड़ा, कुशलगढ़

श्री गौतम लाल मईडा – पूर्व प्रधानाचार्य, रा.उच्च मा. विद्यालय, कुण्डल दानपुर

श्री भूरालाल गरासिया – का.प्रमुख, माही बजाज सागर बांध विभाग बांसवाड़ा

श्री भूरा जी रोत – वरिष्ठ अध्यापक श्री हरीश रोत जी के पूज्य पिताजी

श्री मोहन लाल ताबियार – पूर्व उपप्रधान पंचायत समिति आनन्दपुरी

श्री नाथूलाल डिण्डोर – वरिष्ठ अध्यापक, चौरपनाल, कुशलगढ़

श्री गलाल डामोर – म.द. सेवाश्रम कुशलगढ़ के अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र आर्य के ससुर

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

श्री कल जी अमलियार – अतिरिक्त जिला शिक्षाअधिकारी बांसवाड़ा श्री दल सिंह अमलियार के पूज्य पिताजी।

श्री अशोक कुमार निनामा – अध्यक्ष, शिक्षक संघ सियाराम एवं सामाजिक कार्यकर्ता, सिलठिया, गनोड़ा।

श्री मगन लाल गरासिया – अध्यापक गोर सिंह गरासिया कड़ाई माज के पिताजी।

श्री रमेश निनमा – वरिष्ठ अध्यापक, चौखवाड़ा कुशलगढ़

श्री दिनेश गुप्ता – सदस्य, वेद मन्दिर बांसवाड़ा।

श्री लाल सिंह भाबोर – उप आवासन आयुक्त, उदयपुर (राजस्थान)

श्री दीपक गरासिया – अध्यापक श्री कलसिंह गरासिया के सुपुत्र।

श्री समसु डामोर – अध्ययापक श्री विनेश डामोर, टांडी बड़ी सज्जनगढ़ के पिता।

श्री भूरालाल रोत – प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक कहवाड़ा आनन्दपुरी

सरदार जसवीर सिंह – परतापुर बांसवाड़ा

श्री नैनु जी कठात – रजिस्ट्रार श्री सोहनलाल कठात गोविन्द गुरु जनजाति विवि.

श्री केशवकान्त – अध्यापक श्री जयन्ती लाल जी के पूज्य पिताजी।

श्री कान्तिलाल डामोर – वेटेनरी कम्पाउंडर, खेड़ी बुडवा हालनि बड़ोदिया

सुश्री जया पाटीदार – समाजसेवी श्री रमणभाई पाटीदार की की सुपुत्री

श्री भूराराल डामोर – अध्यापक नि. सरेडी मिलान के पिता जी श्री धनपाल डामोर वेद मन्दिर के छात्र

श्री मनीष शर्मा – पिता श्री रामचन्द्र शर्मा, पूर्व सरपंच सलोपार समाजसेवी।

श्री भाणजी भाई निनामा – पूर्व सरपंच भलेर, समाजसेवी

श्री कमलेश – निवासी फलवा

श्री होरालाल डामोर – समाजसेवी निर्मल डामोर एडवाकेट के पिताजी, वनेलपाड़ा

श्री धुलाभाई डामोर – अध्यापक, वनेलापाडा अशोक जी पी.टी.आई के पिताजी

श्री शान्तिलाल डामोर – नि. राम्बोपाडा ठेकेदार

श्री किशोर पटेल – सल्लोपार समाजसेवी

श्री चुन्नीलाल हुनोर जी की धर्मपत्नी सोगपुरा।

श्री कृष्णा जी पारिख जी की माताजी, गांगडतलाई

श्री जितेन्द्र कलाल – गांगडतलाई

श्री टीकमचन्द पटेल – अध्यापक, थापड़ा।

श्री हालू जी – अध्यापक, थापड़ा।

श्री नाथू जी करासिया–सरपंच ग्राम पंचायत हांडी श्री मासिंह गरासिया के पिताजी

श्री फतेह सिंह पारगी – अध्यापक, ग्राम खूंटा लालु पारगी।

श्री पुंजा भाई पारगी –ग्राम पंचायत शारदा सरपंज श्री खातुदास के पिताजी

श्री हुका जी खड़िया– कमला शंकर खड़िया जी के पिताजी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

पृष्ठ 2 का शेष

असल में यह कहानी मूल रूप से बच्चों की कहानी लिखने वाली ब्रिटेन की एनिड ब्लिटन के 1946 में प्रकाशित कहानियों के लोकप्रिय संग्रह चिमनी कॉर्नर स्टोरीज से ली गयी है। इस कहानी में मूल चरित्र का नाम है हेनरी बस फिर क्या था वहां से कहानी उठाई और दे मारी एनसीईआरटी में और फिर हेनरी बना दिया गया हरी।

असल में दा गेम्स ऑफ बुक के ट्विटर हेंडल ने एनसीईआरटी की पूरी कलाई खोल कर रख दी कि सरकारों ने शिक्षा क्षेत्र को दशकों से वामपंथियों के मानसिक दिवालियेपन को भेंट चढ़ा रखा है। अब पूर्वोत्तर के लोग थोड़े जागरूक हुए अपनी मांग लेकर सामने आये उनकी मांग है कि नॉर्थ ईस्ट का इतिहास पूरी तरह से धुल चुका है। अब एनसीईआरटी की किताबों में उनके इतिहास और डेमोग्राफी पर अध्याय शामिल किया जाए। जिससे की देशभर में उनके साथ रेसिज्म की घटना ना हो और उन्हें भी भारतीय समझा जाए।

साथ ही अब्दुल इन द गार्डन जैसी कहानियाँ और एनसीईआरटी के पाँचवीं तक के पाठ्यक्रम में लगभग हर विषय की किताब में बादशाह अकबर होता है और बहुत अच्छे रूप में आता है। ऐसा लगता है कि हिंदुस्तान में अकबर के अलावा कोई दूसरा राजा हुआ ही नहीं है। बच्चे अकबर को तो जानते हैं, लेकिन पाँचवीं क्लास तक के पाठ्यक्रम में न तो प्रताप हैं, न शिवाजी और न लक्ष्मीबाई, तो देश के लिए मरने मिटने वाले इन शूरवीरों के बारे में बच्चें कब जानेगे?

– *सम्पादक*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 14 जून, 2021 से रविवार 20 जून, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 17-18/06/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 जून, 2021

अभी समाप्त नहीं हुई कोरोना महामारी: अब है बच्चों को भी बचाने की चुनौति

देश में कोरोना की तीसरी लहर की आशंका : सावधानी और हमारी तैयारी

..... सामान्य रूप से हल्का बुखार, खांसी, जुकाम, सांस लेने में दिक्कत, थकान, गले में खराश, दस्त, खाने में स्वाद ना आना, सूंघने की क्षमता कम होना, मांसपेशियों में दर्द होना और लगातार नाक के बहने जैसे लक्षण शामिल हैं। कुछ बच्चों में पेट और आंतों से जुड़ी समस्याओं के साथ-साथ कुछ असामान्य लक्षण भी देखे गए हैं। .... रिसर्च के मुताबिक, बच्चों में मल्टी सिस्टम इंफ्लेमेटरी नामक एक नया सिंड्रोम भी देखने को मिला है। इसके सामान्य लक्षण जैसे लगातार बुखार आना, उल्टी, पेट में दर्द, त्वचा पर चकत्ते, थकान, धड़कनों का तेज होना, आंखों में लालपन, होंटो पर सूजन, हाथों और पैरों में सूजन, सिरदर्द, शरीर के किसी हिस्से में गांठ बनना शामिल हैं।....

देश अभी कोरोना की दूसरी लहर से जूझ रहा है। जानकार कह चुके हैं कि तीसरी लहर का आना तय है और इस लहर में बच्चों के चपेट में आने की ज्यादा आशंका है। देश के टॉप वायरो- लॉजिस्ट डॉ. रवि ने इसकी वजह बताई है। साथ ही यह भी बताया है कि कब तक इसके लिए तैयारी कर लेने की जरूरत है। डॉ. रवि का कहना है कि पहले से कई एशियाई देश कोरोना की तीसरी लहर से जूझ रहे हैं। कई पश्चिमी देशों में चौथी वेव आ चुकी है। ऐसे में भारत इससे अछूता रहेगा, यह मान लेना सही नहीं है।

डॉ. रवि ने सामान्य से लॉजिक दिए हैं। उन्होंने कहा है कि जो इम्यून नहीं हैं, वायरस उन्हें पकड़ेगा। बड़ों को वैक्सीन मिल रही है। लेकिन, बच्चों के लिए वैक्सीन नहीं है। इस पर ट्रायल जारी है। इसमें तीन से 4 महीने का वक्त लगेगा। देश में अभी करीब 30 करोड़ बच्चे हैं। इनमें से एक फीसदी बच्चे भी इंफेक्ट हुए तो तकरीबन 3 लाख बच्चों पर असर पड़ेगा।

कब तक आ सकती है थर्ड वेव?

डॉ. रवि के मुताबिक, एक वेव ठंडी पड़ने के बाद दूसरी आने में 3 से 5 महीने का समय लगता है। लिहाजा, नवंबर-दिसंबर के आसपास तीसरी लहर आ सकती है। तीसरी लहर के लिए पहले से ही तैयारी करनी चाहिए। हमारे पास करीब 6 महीने का वक्त है।

किस तरह की तैयारियों की है जरूरत?

कर्नाटक के कोविड टेक्निकल एडवाइजरी कमेटी के सदस्य डॉ. रवि का कहना है कि सरकार को कुछ अहम नीतिगत फैसले लेने हैं। मसलन, अगले अकादमिक सत्र को लेकर उनका नजरिया क्या होगा। कारण है कि स्कूल सुपर स्प्रेडर बन सकते हैं। हमारे पास बच्चों के लिए कोविड केयर वॉर्ड और आईसीयू काफी नहीं हैं। कुल मिलाकर मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ाने की जरूरत है।

डॉक्टरों ने बजाई है खतरे की घंटी

जाने-माने कार्डिएक सर्जन, नारायण हेल्थ के चेयरमैन व संस्थापक डॉ. देवी शेट्टी ने कहा है कि कोरोना वायरस ज्यादा से ज्यादा लोगों को चपेट में ले रहा है। इसके लिए वह स्वरूप बदल रहा है। पहली वेव के दौरान कोरोना ने मुख्य रूप से बुजुर्गों को प्रभावित किया। दूसरी लहर में युवाओं को अपना शिकार बनाया। तीसरी लहर में बच्चों के प्रभावित होने की आशंका है। कारण है कि ज्यादातर बड़े पहले ही इंफेक्ट हो चुके हैं या फिर उन्हें वैक्सीन लग चुकी है।

बच्चों में कोरोना के लक्षण

ज्यादातर बच्चे जो कोविड-19 से प्रभावित हैं, उनमें सामान्य रूप से हल्का बुखार, खांसी, जुकाम, सांस लेने में दिक्कत, थकान, गले में खराश, दस्त, खाने में स्वाद ना आना, सूंघने की क्षमता कम होना, मांसपेशियों में दर्द होना और लगातार नाक के बहने जैसे लक्षण शामिल हैं। कुछ बच्चों में पेट और आंतों से जुड़ी समस्याओं के साथ-साथ कुछ असामान्य लक्षण भी देखे गए हैं।

रिसर्च के मुताबिक, बच्चों में मल्टी सिस्टम इंफ्लेमेटरी नामक एक नया सिंड्रोम भी देखने को मिला है। इसके सामान्य लक्षण जैसे लगातार बुखार आना, उल्टी, पेट में दर्द, त्वचा पर चकत्ते, थकान, धड़कनों का तेज होना, आंखों में लालपन, होंटो पर सूजन, हाथों और पैरों में सूजन, सिरदर्द, शरीर के किसी हिस्से में गांठ बनना शामिल हैं।

प्रतिष्ठा में,

कोरोना के साथ ब्लैक फंगस के लक्षण

- ★ नाक का बन्द होना।
- ★ नाक से काले रंग का डिस्चार्ज आना
- ★ चेहरे में दर्द, सुन्न होना, सूजन आना
- ★ सिर में लगातार दर्द होना
- ★ दांत दर्द, दांतों का हिलना, जबड़े में दर्द
- ★ आंखों में दर्द के साथ धुंधला दिखना,
- ★ बुखार का आना या शरीर नीला पड़ना
- ★ सीने में दर्द, सांस लेने में दर्द होना
- ★ फेफड़ों में पानी भरना, खून की उल्टी
- ★ मुंह से बदबू आना, मानसिक भ्रम होना

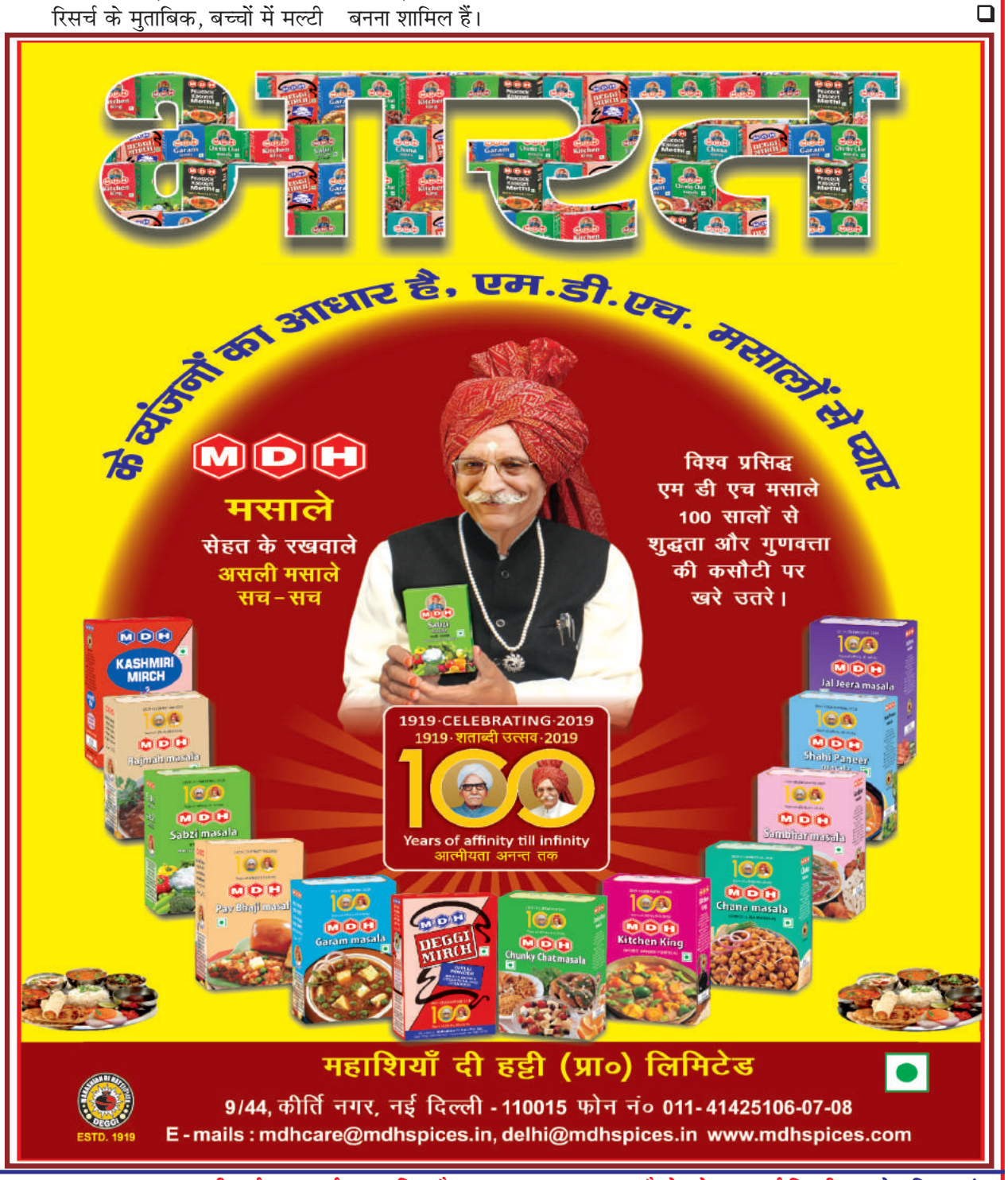

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह